महामुनि बाबाजी महाराज का आदि परिचय और शिक्षा

इस पृथ्वी पर ईश्वर कोटि और जीव कोटि यह दो श्रेणियों के मानव दृष्टिगोचर होते हैं। ईश्वर कोटि के अन्तर्गत जो जन्म ग्रहण करते हैं वे ही इस विश्व सृष्टि के मध्य अयोनि- सम्भवा सत्ता विशेष हैं ईश्वर कोटि के मध्य जो जन्म ग्रहण करते है वे ही ईश्वर के अवतार स्वरूप होते हैं। वे ही अवतार स्वरूप महात्मागण जगत् के प्रयोजन के लिए युगावतार रूप से अवतरण करके मानव गोष्ठी के समष्टिगत प्रारब्ध एवं आरब्ध को धारण करते हुए मानव समुह को ब्रह्म निर्वाण के पथ स्वरूप मोक्ष मार्ग का दर्शन करवा देते हैं। ये ही हुए वास्तविक ''सद्गुरू''। परमयोगीश्वर श्री श्री श्यामाचरण लाहिड़ी महाशय ऐसे ही एक महापुरूष थे। एवं इनके सद्गुरू थे महामुनि ''श्रीश्री बाबाजी महाराज''।

साधन पथ के मार्ग में मुनि और ऋषियों में पार्थक्य परिलक्षित होता हैं। ऋग्संहिता में एक मार्ग को ''मौनेय'' और एक अन्य मार्ग को ''आर्षेय'' कहा गया है। किन्तु ये दोनों ही मार्ग सिद्ध अवस्था में मिलकर एक हो जाते हैं। वेद और उपनिषद में सर्वत्र ये दोनों मार्ग एक दूसरे से ओतप्रोत रहते हैं। ''अयमात्मा ब्रह्म'' उसी महावाक्य के समन्वय वाचक हैं। इस प्रकार जो ऋषि हैं, उनके मुनि होने में कोई बाधा नहीं है। इस विभूति योग में सिद्ध कपिल को ही विशेषरूप से मुनि कहा गया है; और कपिल ऋषि का भी उल्लेख मिलता है। वेदान्त वादीयों के मतानुसार यही कपिल ऋषि हूए ''हिरण्यगर्भ''। सांख्यआचार्यो के मतानुसार कपिल ही हिरण्यगर्भ रूप में विश्व के आदि गुरू हैं। सांख्ययोग हुआ मुनियों का दर्शन और वेदान्त योग हुआ ऋषियों का दर्शन। व्यासदेव रचित पुराण में दोनों का समन्वय हैं। इस प्रकार व्यासदेव को हम लोग मुनि एवं ऋषि दोनों ही बोल सकते हैं। पुराण मत के अनुसार महामुनि कपिल महाऋषि कर्द्दम के पुत्र थे, एवं विराट पुरूष के अवतार विशेष थे। भागवत में लिखित हैं महर्षि कर्द्दम की साधना के फलस्वरूप ब्रह्मा के मानस पुत्र भगवान सनत् कुमार ही कपिल मुनि के देह में कर्द्दम के पुत्र रूप में धराधाम में अवतरित हुए थे। आत्मज्ञान की दृष्टि में उपनीत होकर ही ज्ञात होता है कि ये महामुनि कपिल ही हुए महावतार ''श्रीश्री बाबाजी महाराज''। परम योगीश्वर श्रीश्री श्यामाचरण बाबा स्वयं के जन्मांतर के विषय में कह कर गये थे कि सत्य युग में वे थे ''सत्यसुकृत''; ''सत्य सुकृत'' अर्थात् सत्यदृष्टा ऋषि। वेद में यज्ञ को सुकृत कहा जाता है। देवर्षि नारद के सद्गुरु थे भगवान सनत् कुमार। अतएव युग संधिक्षण एवं धर्मग्लानि को निर्वापित करने के लिए महामुनि जी की साधना के फलस्वरूप श्रीश्री श्यामाचरण बाबा इस धराधाम में आविर्भूत हुए। कपिल के सांख्य-दर्शन में निरीश्वर वाद का प्रकाश देखा जाता है। सांख्य-दर्शन निरीश्वर और योग-दर्शन सेश्वर होता है। किन्तु गीता में जो सांख्य-दर्शन और दर्शन के विषय में कहा गया है वे श्रुति एवं स्मृति द्वारा स्वीकृत हैं। योग-दर्शन में ईश्वर के प्रसंग में कहा गया है इसीलिए योग सेश्वर दर्शन हैं। मूलत: योग सूत्र हुआ एक सार्वजनीक आध्यात्मिक प्रयोगात्मक विज्ञान शास्त्र। अत: परवर्ती काल में उपासना के लिए ईश्वर जब स्वीकृत हैं तब उनका स्थान पतंजलि ने (सिद्ध कपिल की देह) साधना-विज्ञान सम्मत विवृति पातंजल योग-दर्शन में दिया है।

किन्तु यह लक्ष्यणीय है कि पतंजलि का ईश्वर दर्शन प्रणव वाच्य पुरूष विशेष है। सांख्य दर्शन के पुरूष सृष्टा नहीं हैं, और वे 'न सृजति', अर्थात् सृष्टि की रचना कोई नहीं करता है। सृष्टि स्वत: ही होती चली जा रही है। सांख्य-दर्शन के मतानुसार प्रकृति नित्य का परिणाम है। कपिल मुनि का सांख्य दर्शन व पतंजलि के योग-दर्शन ने गीता में एक अपूर्व समरस रुप धारण किया है। वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है। श्रीश्री श्यामाचरण लाहिड़ी बाबा जिन्होंने गीता की साधना ब्रह्मविद्या रूप विज्ञान सम्मत मार्ग को 'क्रियायोग' नाम दिया था और इस युग में प्रचार एवं प्रतिष्ठित करने के लिए वे मानव समाज में अवतीर्ण हुए व यह प्रज्ञा के आलोक में स्पष्ट हुआ। परम गुरु श्रीश्री बाबाजी महाराज की असाधारण कृपा और अभूतपूर्व योग विभूति के अधिकारी होते हुए गृहस्थ आश्रम में रहकर भी उन्होंने मानवगोष्ठी के मध्य में योग साधना के प्रत्यक्ष ज्ञान की धारा एवं विज्ञान सम्मत पथ का प्रचार किया।

अवतार पुरुष जब भी भगवत्लीला करने के उद्देश्य से धरा में अवतीर्ण होते हैं तो जगत् में सत्य संस्थापन के कर्म करने के लिए वे अपने अंतरंगों को साथ लेकर अवतरण करते हैं। श्रीश्री श्यामाचरण बाबा के क्षेत्र में भी हमलोग इसी प्रकार देखते हैं। श्री युक्तेश्वरगिरि महाराज, स्वामी प्रणवानन्दगिरि, श्री भूपेन सान्याल महाशय, श्री पंचानन भट्टाचार्य, श्री रामदयाल मजूमदार, केवलानंदजी, कैलाशचन्द्र बंदोपाध्याय, केशवानंदजी इत्यादि ऋषि कल्प महात्मागण सभी श्रीश्री श्यामाचरण लाहिड़ी महाशय के शिष्य रुप में परिचित थे। योगयुक्त अवस्था में आत्मज्ञान पूर्ण दृष्टि द्वारा यदि इन महापुरूषों का आदि परिचय जाना जाए तो दृष्टिगोचर होता है कि ये प्रत्येक ही प्राचीन ब्रह्मर्षि महर्षि वैदिक ऋषिवृन्द थे। अतएव हमलोग देख सकते हैं कि महामुनि बाबाजी महाराज की इच्छा से ही श्रीश्री श्यामाचरण लाहिड़ी महाशय एक विराट ईश्वर-कोटि के महामंडल को लेकर धराधाम में सत्य स्थापन के लिए अवतीर्ण हुए थे। इनके पीछे किन्तु एक और विराट महात्मा मंडल की साधना निबद्ध थी। अन्यथा इतने परिमाण में मोक्ष प्राप्त महात्माओं का एक ही समय में

इस पृथ्वी में अवतरण होना असम्भव था।

ईश्वरकोटि के महात्मा स्वभाव-सिद्ध योगी होते हैं। श्रीश्री लाहिड़ी महाशय की जीवन-यापन की भावधारा ने ही यह प्रमाण कर दिया है। लाहिड़ी महाशय सद्गुरू की कृपा से विपुल योगविभूति के ऐश्वर्य को प्राप्त कर चुके थे। वे इस ऐश्वर्य को अत्यंत सहज स्वाभाविक रुप से वहन करके चलते थे। विशेष प्रयोजन के अतिरिक्त वे अपनी इस विभूति का साधारणत: प्रकाश नहीं करते थे। कभी दुष्टों का दमन करने के लिए तो कभी नितांत लीलाच्छल में उनकी योगविभूति का ऐश्वर्य लोगों के सम्मुख कभी-कभी प्रकाशित होता था। ईश्वराभिमुखी भक्तों के विश्वास को दृढ़ करने के लिए अनेक समय वे विभूति लीला का प्रदर्शन करते थे। उनका बहु दृष्टांत उनकी आत्मकथा में लिपिबद्ध किया हुआ है। यहाँ पर पुन: उल्लेख करने का कोई प्रयोजन नहीं हैं। अवतार को चाहे जितनी बार भी इस धराधाम में नवदेह धारण करना पड़े, या वह कितना भी बड़ा महारथी क्यों न हो, उसे सत्ता के पितृज व मातृज मायिक मलिनता से मुक्त होने के लिए सद्गुरू लाभ पूर्वक अंग प्रायश्चित्त करके तपस्या में निमग्न होना ही पड़ता है। तब अवतारगण का सद्गुरू शिष्य के आगमन के लिए अपेक्षा करता है। ये दृष्टांत हमने श्रीश्री लाहिड़ी बाबा के जीवन में भी देखा है।

सदगुरु विभिन्न प्रकार से आटाचक्की में निष्पेषित करके शिष्य के आधार को जीवभाव से शिवभाव में रूपांतरित करता है। यह दृष्टांत भी श्रीश्री लाहिड़ी बाबा के जीवन में देखा जाता है। उसी दृष्यांत की एक धटना यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ।

एक पर एक निगुढ़ योग साधना के स्तरों को भेद करके लाहिड़ी महाशय जब साधन पथ पर अग्रसर हुए थे तब एक दिन वे निज गृह के सम्मुख घूम रहे थे तो उस समय उन्होंने देखा कि निकट में ही वट वृक्ष के नीचे एक साधु बैठ कर गाँजे का सेवन कर रहा है। उनका मुखमंडल आकर्षण हीन था। उनके परिधृत परिधान छिन्न एवं अपरिष्कृत थे। उनको देखने मात्र से ही श्रद्धा भक्ति का उद्वेग तो उठता ही नहीं बल्कि मन में अनेक प्रकार की शंकाऐ जाग उठती है। प्राचीन काल में इस श्रेणी के साधु को देखने से ही लाहिड़ी महाशय उनको प्रवंचक अथवा चोर बदमाश समझते। किंतु समीप जाकर उन्होंने देखा एक अविश्वासनीय दृश्य! यह कैसा अद्भूत कांड है! वे क्या जागृत अवस्था में हैं या स्वपन देख रहे हैं! उनके परम पुज्यपाद गुरूदेव स्वयं ही वहाँ बैठकर गाँजा सेवन करने वाले कुदर्शन साधु के लोटे को निष्ठा सहित परिष्कृत कर रहे थे। बाबाजी महाराज यहाँ! ऐसी शोचनीय अवस्था बाबाजी महाराज की क्यों? निकट जाकर श्यामाचरण लाहिड़ी महाशय ने साष्टांग प्रणाम किया। दुखी हृदय से बाबाजी महाराज को प्रश्न किया—''बाबा यह कैसा कांड! आप क्यों इस हीन कर्म में लिप्त हुए? यह गंजिका सेवनकारी साधु कौन है? हाथ का लोटा घसते-घसते प्रशान्त कंठ से गुरूजी ने उत्तर दिया—''श्यामाचरण मैं जो यहाँ साधु सेवा कर रहा हूँ। चूँकि सभी घट-घट में मेरा नारायण विराजमान है। तुम नारायण के सर्वव्यापी चैतन्यमय रूप को आविष्कार करने की चेष्टा क्यों नहीं कर रहे हो?'' तत्क्षणात् लाहिड़ी महाशय ने उपलब्ध किया—सर्वजीव व सर्वभूत में परामात्मा विराजमान है या परिव्याप्त है। उनके परम अस्तित्व को शिष्य --चेतना में प्रबुद्ध करने के लिए ही सद्गुरू शिष्य के साथ यह अपरुप लीला करते हैं। योगी शिष्य के हृदय में विश्व-चेतना के प्रेम का द्वार उन्मुक्त करने के लिए सद्गुरु इस प्रकार की अभिनव लीला करते रहते हैं। श्यामाचरण के चेतना के गभीर में अवचेतन मन के तल में जीव के प्रति जो भेदज्ञान सूक्ष्मरूप से अज्ञात रह गया था उसे सद्गुरू श्रीश्री बाबाजी महाराज ने समाप्त कर दिया। लाहिड़ी महाशय की सर्वसत्ता एवं सर्वचैतन्य में एक सर्वव्यापी सर्वातीशायी परमबोध प्रकाशित हो उठा।

जय सद्गुरूजय। हिरण्य तनुधारी हे महान गुणाकर वासुदेव जगन्नाथ रूपे भुवनेश्वर। वंदे सदगुरू चरणारबिन्दे.....।

परवर्ती काल में श्रीश्री लाहिड़ी महाशय ने क्या सन्यासी क्या संसारी सकल भक्त शिष्यों ईश्वरानुरागी भक्त जनो को अपने पवित्र जीवन की गंगाधारा से सिंचित कर के सत्य में ''परमबोध'' जागृत किया। जीवबोध से शिव-चेतना में रूपान्तरित होने के सहज मार्ग को उदार उन्मुक्त हस्त से उन्होंने समाविष्ट भक्त जनो में वितरण करके सृष्टि की क्रमविवर्तन की धारा में मानव चेतना को समाज में उत्तोलित करने के लिए बीज रूप क्रियायोग को वपन किया। श्रीश्री श्यामाचरण की न्याय अद्वितीय महात्मा के प्रति मेरे हृदय का अनंत श्रद्धा व प्रणाम।

हरि ॐ तत् सत्

हिन्दी अनुवाद :
श्रीमती ज्योति पारेख।

कुन्द : यह चमेली का एक भेद है; यह फूल मोतियों की तरह सफेद और कोमल वर्ण का होता है। कुन्द अर्थात् ''मुकुन्द'', ज्योत के रूप को ही प्रकाशित करता है। जब साधक कूटस्थ मध्य पवित्र श्वेत ज्योति का दर्शन करता है, तब साधक के हृदय में विशुद्ध सात्विक भावों का संचार होता है।